हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

11 फायर कर्मियों की हड़ताल को सफाई कर्मियों का खुला समर्थन

12 स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मनाया विश्व मलेरिया दिवस

नारनौल की अनाज मंडियों में नहीं मिल रहा 10 रुपये में भोजन

गैस संकट से बंद सस्ती कैंटीनें मजदूरों की 'थाली पर ताला'

महिला समूहों की रोजी-रोटी भी प्रभावित, स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की आजीविका पर भी पड़ रहा नकारात्मक असर

नारनौल। लेबर कैंटीन में खाना खाने के लिए पहुंचा व्यक्ति व बंद पड़ी अनाज मंडी की अटल कैंटीन। *फोटो: हरिभूमि*

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

शहर की नई और पुरानी अनाज मंडियों में गरीबों और मजदूरों को सस्ता भोजन उपलब्ध कराने वाली कैंटीनों पर इन दिनों ताले लटके हुए हैं। वजह है गैस की किल्लत। कमर्शियल सिलेंडर की आपूर्ति बाधित होने से दोनों कैंटीनों में खाना बनना बंद हो गया है, जिससे न सिर्फ मजदूरों की थाली सूनी हो गई है, बल्कि इन कैंटीनों से जुड़ी महिलाओं के रोजगार पर भी संकट गहरा गया है। गौर हो कि राजीव चौक वाली पुरानी अनाज मंडी में संचालित लेबर कैंटीन को रेवाड़ी के श्रम विभाग द्वारा चलाया जाता है, जबकि जल महल के समीप नई अनाज मंडी में किसान अटल कैंटीन को मार्केट कमेटी द्वारा संचालित किया जाता है। दोनों का ही उद्देश्य मंडी में आने वाले किसानों और मजदूरों खासकर गरीबों को मात्र 10 रुपये में दोपहर का भोजन उपलब्ध कराना है। रोजाना सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक चलने वाली ये कैंटीनें लंबे समय से जरूरतमंदों के लिए राहत का साधन रही हैं, लेकिन अब गैस संकट ने इस व्यवस्था को झटका दे दिया है।

महिलाओं के रोजगार पर संकट मजदूरों को भटकना पड़ रहा

इन कैंटीनों को अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय के अधीन चल रहे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार मिशन के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा संचालित किया जाता है। पुरानी मंडी की लेबर कैंटीन में छह महिलाएं और नई मंडी की अटल कैंटीन में चार महिलाएं कार्यरत हैं। कैंटीन बंद रहने से इन महिलाओं की आय पूरी तरह प्रभावित हो रही है, जिससे उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ रहा है।

मजदूर हो रहे खाने के लिए परेशान

दूसरी ओर, सस्ते भोजन पर निर्भर मजदूरों और गरीब तबके के लोगों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। रोजाना मजदूरी करने वाले कई लोग दोपहर का भोजन इन्हीं कैंटीनों में करते थे, लेकिन अब उन्हें इधर-उधर भटकना पड़ रहा है या महंगा खाना खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है।

खर्च बढ़ा

मंडी में काम करने वाले मजदूरों का कहना है कि 10 रुपये में मिलने वाला भोजन उनके लिए बड़ी राहत था। अब कैंटीन बंद होने से उनका खर्च बढ़ गया है और कई बार उन्हें भूखे पेट ही काम करना पड़ रहा है। गौरतलब है कि एक ओर सरकार गरीबों के लिए सस्ती भोजन योजनाओं को बढ़ावा देने की बात करती है, वहीं दूसरी ओर जमीनी स्तर पर गैस जैसी बुनियादी जरूरत की आपूर्ति में कमी से ये योजनाएं प्रभावित हो रही हैं। यदि जल्द ही गैस आपूर्ति सुचारू नहीं हुई तो इसका असर और गहरा सकता है।

खाड़ी युद्ध के चलते ठप हो रही व्यवस्था

जानकारी के अनुसार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चल रहे खाड़ी युद्ध के चलते गैस आपूर्ति प्रभावित हो रही है। इसका सीधा असर स्थानीय स्तर पर देखने को मिल रहा है। गत 28 फरवरी के बाद से अब तक दो-तीन बार इन कैंटीनों को गैस की कमी के कारण बंद करना पड़ा है। हर बार कुछ दिन के लिए राहत मिलती है, लेकिन फिर वही समस्या सामने आ जाती है। इन कैंटीनों में भोजन बनाने के लिए कमर्शियल सिलेंडर का उपयोग किया जाता है, जिसकी आपूर्ति समय पर न होने से पूरा सिस्टम चरमरा गया है।

कैंटीन संचालिका का दर्द

कैंटीन की संचालिका प्रियंका ने बताया कि जब गैस सिलेंडर खत्म होने को थे, तब संबंधित गैस एजेंसी से संपर्क किया था, लेकिन एजेंसी ने अब तक सिलेंडर उपलब्ध नहीं कराया है। इन सिलेंडरों के लिए महिला ग्रुप ने संबंधित कार्यालयों लेबर विभाग रेवाड़ी, एडीसी कार्यालय नारनौल तथा गैस आपूर्ति कराने वाले फूड सप्लाई डिपार्टमेंट को भी पत्र लिखे हैं, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। कमाल की बात है कि महिला समूह ने एडीएफसी अरुण सैनी के मोबाइल पर भी फोन करके गैस की समस्या बता चुका है, लेकिन अधिकारी गोल गोल बातें करते हैं और तसल्ली बख्श जवाब नहीं देते हैं।

– प्रियंका (कैंटीन संचालिका)।

यह कहती हैं अधिकारी

"आज और कल कैंटीन नहीं चल पाएगी, लेकिन परसों से इसे फिर शुरू करने का प्रयास किया जाएगा।" हालांकि उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सिलेंडर की व्यवस्था करना महिला समूहों की जिम्मेदारी है।

– नुकुल यादव, सचिव, मार्केट कमेटी, नारनौल।

पिछले चार महीनों से शहर में जलापूर्ति व्यवस्था बेहद खराब

महेंद्रगढ़ में जल संकट गहराया दूषित पानी ने बढ़ाई समस्या

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

शहर में इन दिनों पेयजल संकट गहराता जा रहा है। अनियमित जलापूर्ति और कई वार्डों में दूषित पानी की समस्या ने आम नागरिकों की परेशानियां बढ़ा दी हैं। इस गंभीर स्थिति को लेकर मोहल्ला कानोडिया के निवासियों ने प्रदेश के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन एसडीओ जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी को सौंपा। पत्र में बताया गया है कि पिछले चार महीनों से महेंद्रगढ़ शहर में जलापूर्ति व्यवस्था बेहद असंतोषजनक बनी हुई है। भीषण गर्मी के बीच पूरे शहर में एक दिन छोड़कर एक दिन पानी की सप्लाई की जा रही है, जिसे अल्टरनेट डे प्रणाली कहा जा रहा है। नागरिकों का कहना है कि यह व्यवस्था उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने में पूरी तरह नाकाफी साबित हो रही है। पानी की कमी के कारण लोगों को दूर-दराज से पानी लाना पड़ रहा है, जिससे खासकर महिलाओं और बुजुर्गों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

महेंद्रगढ़। जल सप्लाई को लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन एसडीओ को सौंपते।

ठोस कार्रवाई नहीं की

स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब मोहल्ला कानोडिया के करीब 30 से 40 घरों में पिछले 10 दिनों से दूषित और बदबूदार पानी की सप्लाई हो रही है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, पानी में सीवरेज का मिश्रण होने के कारण यह पूरी तरह से अस्वास्थ्यकर हो गया है। इसके चलते क्षेत्र में संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है। लोगों का कहना है कि उन्होंने कई बार संबंधित अधिकारियों को इस बारे में सूचित किया, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। मोहल्ला कानोडिया वासी मनोज मद्दिल, प्रदीप कुमार, देवांश, कविश, पीयूष, प्रदीप, ईना, मुकेश, लोकेश, राजबाला, सरिता, बबली, आशा, मीना सहित अन्य लोगों ने आरोप लगाया कि विभागीय लापरवाही के चलते समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। उन्होंने बताया कि पाइप लाइन में तकनीकी खामियों के कारण साफ पानी की जगह गंदा पानी आ रहा है।

कनीना उपचुनाव: अंतिम दिन 6 प्रत्याशियों ने दाखिल किए नामांकन पत्र

कनीना। नगर पालिका के वार्ड संख्या 14 के लिए आगामी 10 मई को होने वाले उपचुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया के अंतिम दिन शनिवार को छह उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए। जिससे कुल प्रत्याशियों की संख्या बढ़कर आठ हो गई है। बता दे कि 21 से 25 अप्रैल तक चली नामांकन प्रक्रिया के दौरान अंतिम दिन सुमेर सिंह, अशोक कुमार, बलजीत, प्रदीप यादव व अनूप यादव ने नामांकन पत्र दाखिल किए। इसके अतिरिक्त विकास ने अपने पिता सुरेंद्र के पक्ष में कवरिंग उम्मीदवार के रूप में नामांकन प्रस्तुत किया। बलजीत राज व सुरेन्द्र ने शुक्रवार को नामांकन दाखिल किए थे। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह अहलावत बताया कि नामांकन प्रक्रिया शांतिपूर्वक संपन्न हुई है।

प्रदेश के 11 जिले चिन्हित, चार दिन तक तारादेवी स्थित प्रशिक्षण केंद्र में जाएंगे युवा

'नेचर स्टडी–कम–हाइकिंग, ट्रेकिंग कैंप' से युवा सिखेंगे स्काउटिंग की बारीकियां

- युवाओं में नेतृत्व व पर्यावरण चेतना का होगा विकास

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

युवाओं को स्काउटिंग की बारीकियां सिखाने के लिए "नेचर स्टडी–कम–हाइकिंग, ट्रेकिंग कैंप" लगाए जाएंगे। इसके लिए प्रदेश के 11 जिलों को चयन किया गया है। इनमें महेंद्रगढ़, चरखी दादरी, हिसार, गुरुग्राम, जींद, पानीपत, पलवल, कैथल, कुरूक्षेत्र, रेवाड़ी व मेवात शामिल है। चार दिन का यह कैंप 27 से 30 अप्रैल के बीच तारादेवी स्थित प्रशिक्षण केंद्र में होगा। इसकी तैयारी हरियाणा स्टेट भारत स्काउट्स एंड गाइड्स ने की है। इस संबंध में राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट्स) ने इन जिला के डीईओ को परिपत्र जारी किया है।

परिपत्र के अनुसार कैंप में स्काउट्स एवं रोवर्स वर्ग के 15 वर्ष से अधिक आयु के शारीरिक व चिकित्सकीय रूप से सक्षम विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलेगा। जिला स्तर पर इच्छुक एवं योग्य प्रतिभागियों का चयन कर प्रशिक्षित स्काउटर्स के साथ उन्हें कैंप में भेजने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि वे कैंप की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। कैंप की थीम "प्रकृति की सुंदरता और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता" रखी गई है। इस थीम के माध्यम से प्रतिभागियों को प्रकृति के विविध रूपों से परिचित कराते हुए पर्यावरण संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराया जाएगा। साथ ही उन्हें यह भी सिखाया जाएगा कि बदलती परिस्थितियों में किस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हुए संतुलित जीवन शैली अपनाई जा सकती है।

प्रति प्रतिभागी देंगे होंगे 850 रुपये

पंजीकरण एवं विकास शुल्क के रूप में प्रति प्रतिभागी 850 रुपये निर्धारित किए गए हैं। जिसमें भोजन, राज्य स्तरीय प्रशिक्षण, पंजीकरण तथा अन्य व्यवस्थाएं शामिल हैं। जबकि यात्रा व्यय, दैनिक भत्ता एवं कैंप शुल्क संबंधित विद्यालय, जिला स्काउट-गाइड फंड या अनुदान मद से वहन किए जा सकेंगे। प्रतिभागियों के लिए विस्तृत कैंप किट भी निर्धारित की गई है। इसमें पूर्ण स्काउट यूनिफॉर्म (ग्रे शर्ट, नेवी ब्लू पैंट, स्कार्फ, वॉगल, बेल्ट, काले जूते व मोजे, बेरेट कैप), गर्म बिस्तर (रजाई/कंबल), भोजन के बर्तन (मग, प्लेट, चम्मच), सुई-धागा, टॉयलेट सामग्री, रात के लिए गर्म कपड़े, टॉर्च, रेनकोट या छाता, नोटबुक, पेन-पेंसिल, एक मीटर लंबी गांठ बांधने की रस्सी तथा प्राथमिक उपचार किट व व्यक्तिगत दवाइयां शामिल हैं।

सोना-चांदी या मल्टी-एसेट फंड? निवेश से पहले जानें पूरा गणित

- उच्च रिटर्न के लालच में न करें गलती, जोखिम और रिटर्न का संतुलन ही समझदारी
- बाजार की चाल, जोखिम और लक्ष्य के हिसाब से चुनें सही विकल्प, वरना होगा नुकसान
- गोल्ड ईटीएफ, कमोडिटी फंड और मल्टी-एसेट फंड के फर्क को समझना बेहद जरूरी
- कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते
- ये उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी

शेयर बाजार और फिक्स्ड डिपॉजिट से आगे बढ़ते हुए अब निवेशक सोना, चांदी, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड और अन्य कमोडिटी विकल्पों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। महंगाई, वैश्विक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव के दौर में ये एसेट क्लास पोर्टफोलियो को संतुलन देने का काम करते हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब निवेशक अलग-अलग विकल्पों कमोडिटी फंड, गोल्ड-सिल्वर ईटीएएफ और मल्टी-एसेट फंड को एक जैसा मान लेते हैं। यही भ्रम कई बार गलत निवेश फैसलों और नुकसान की वजह बनता है। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते। ये फंड उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी होती हैं। यानी इनका प्रदर्शन केवल कमोडिटी की कीमत पर नहीं, बल्कि उन कंपनियों के बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केट कंडीशन पर भी निर्भर करता है। इस कारण ये फंड तकनीकी रूप से इक्विटी फंड की श्रेणी में आते हैं और इनमें जोखिम भी उसी के अनुरूप अधिक होता है।

कमोडिटी फंड : हाई रिस्क, साइकिल पर निर्भर रिटर्न

कमोडिटी फंड्स का प्रदर्शन "कमोडिटी साइकिल" पर आधारित होता है। जब मेटल या एनर्जी सेक्टर में तेजी आती है, तो ये फंड अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन गिरावट के समय इनका प्रदर्शन तेजी से नीचे भी आ सकता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ इन्हें लॉन्ग टर्म कोर इन्वेस्टमेंट के रूप में नहीं देखते। आमतौर पर 1 से 3 साल के लिए, किसी खास सेक्टर में तेजी का फायदा उठाने के लिए ही इनका उपयोग किया जाता है। निवेश सलाहकारों के अनुसार, पोर्टफोलियो में इनका हिस्सा 5% से 10% से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अधिक निवेश जोखिम को बढ़ा सकता है। साथ ही, इनमें निवेश करने से पहले बाजार की स्थिति और सेक्टर ट्रेंड को समझना बेहद जरूरी है।

गोल्ड और सिल्वर ईटीएएफ कीमत से जुड़ा निवेश

अगर आपका उद्देश्य सीधे सोने या चांदी की कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ उठाना है, तो गोल्ड ईटीएएफ और सिल्वर ईटीएएफ बेहतर विकल्प हैं। ये फंड फिजिकल गोल्ड या सिल्वर की कीमत को ट्रैक करते हैं, यानी इनका रिटर्न सीधे धातु की कीमत पर निर्भर करता है। इनका सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको फिजिकल गोल्ड खरीदने, स्टोर करने या उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करनी पड़ती। साथ ही, इनकी पारदर्शिता और लिक्विडिटी भी अधिक होती है, क्योंकि इन्हें शेयर बाजार में आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है। हालांकि, इनका रिटर्न आमतौर पर स्थिर और सीमित होता है। ये तेजी से मल्टीबैगर रिटर्न देने के बजाय पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का काम करते हैं। इसलिए इन्हें "सेफ हेवन" या हेजिंग टूल के रूप में देखा जाता है।

मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड : संतुलित निवेश का विकल्प

दूसरी ओर, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड उन निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प हैं, जो एक ही निवेश में विविधता (डाइवर्सिफिकेशन) चाहते हैं। ये फंड इक्विटी, डेट और कमोडिटी तीनों एसेट क्लास में निवेश करते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब एक एसेट क्लास कमजोर प्रदर्शन करता है, तो दूसरा उसे संतुलित कर देता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार में गिरावट के दौरान सोना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है, जिससे कुल पोर्टफोलियो पर असर कम होता है।

पिछले आंकड़ों पर न जाएं

बाजार में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे कई कमोडिटी या मल्टी-एसेट फंड्स उपलब्ध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में 20-22% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन विशेषज्ञ साफ कहते हैं कि केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला लेना गलत हो सकता है। कमोडिटी सेक्टर स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इसलिए इसमें औसतन 10-12% सीएजीआर की उम्मीद रखना ज्यादा व्यावहारिक है।

समझदारी से करें संतुलन

निवेश का कोई एक "सही" विकल्प नहीं होता। यह पूरी तरह आपके लक्ष्य, जोखिम क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। गोल्ड ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड्स आम निवेशकों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प माने जाते हैं, जबकि कमोडिटी फंड्स केवल समझदार और अनुभवी निवेशकों के लिए ही उपयुक्त हैं। अंततः, एक संतुलित पोर्टफोलियो ही लंबे समय में बेहतर रिटर्न और कम जोखिम सुनिश्चित करता है। इसलिए निवेश से पहले जरूरतें समझें, जल्दबाजी से बचें और जहां जरूरी हो, वित्तीय सलाहकार की मदद लें ताकि आपका पैसा सही दिशा में काम कर सके।

स्मॉलकैप एक माह में 10% उछला जोखिम भी उतना ही बढ़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

पिछले एक महीने में स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। औसतन 10% तक का रिटर्न देकर इस सेगमेंट ने लार्ज और मिडकैप फंड्स को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में कई निवेशकों के मन में सवाल उठ रहा है क्या यह तेजी लंबे समय के बुल रन की शुरुआत है या फिर यह सिर्फ गिरावट के बाद आई एक अस्थायी रिकवरी? विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी को समझदारी से देखना जरूरी है, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया फैसला नुकसान भी करा सकता है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने पिछले एक महीने में औसतन करीब 10% रिटर्न दिया है। कुछ फंड्स ने तो इससे भी ज्यादा प्रदर्शन किया है, जिससे निवेशकों का भरोसा इस सेगमेंट में फिर से बढ़ा है। हालांकि, सभी फंड्स का प्रदर्शन एक जैसा नहीं रहा। जहां कुछ फंड्स ने दो अंकों का रिटर्न दिया, वहीं कुछ ने नेगेटिव रिटर्न भी दिखाया। इससे साफ है कि यह तेजी पूरे सेगमेंट में समान रूप से नहीं फैली है।

तेजी की वजहः लिक्विडिटी और एसआईपी का सहारा

विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स में आई इस तेजी के पीछे कई कारण हैं। बाजार में बढ़ती लिक्विडिटी, निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता में सुधार और लगातार आने वाला एसआईपी निवेश इस उछाल को सपोर्ट कर रहा है। जब बाजार में नकदी ज्यादा होती है, तो उसका असर छोटे शेयरों पर जल्दी दिखाई देता है। इसी वजह से स्मॉलकैप शेयरों में तेजी अक्सर तेज और अचानक होती है।

क्या यह स्थायी बुल रन है या शॉर्ट टर्म रिकवरी?

यहीं सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल यह तेजी एक शॉर्ट टर्म रिकवरी ज्यादा लगती है, न कि लंबी अवधि की स्थायी तेजी। स्मॉलकैप सेगमेंट में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। गिरावट के बाद तेज उछाल आना आम बात है। इसलिए केवल एक महीने के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेना जोखिम भरा हो सकता है।

वैल्यूएशन बनी चिंता

हालिया तेजी के बाद स्मॉलकैप शेयरों की वैल्यूएशन फिर से ऊंची नजर आने लगी है। उदाहरण के तौर पर, निफ्टी स्मॉलकैप 100 का फॉरवर्ड पी/ई अपने लंबे औसत से ऊपर चल रहा है। इसका मतलब है कि शेयरों की कीमतें उनकी कमाई के मुकाबले ज्यादा हो चुकी हैं। ऐसे में आगे रिटर्न सीमित हो सकता है या फिर बाजार में करेक्शन देखने को मिल सकता है।

हर निवेशक के लिए सही नहीं

स्मॉलकैप फंड्स हाई रिस्क कैटेगरी में आते हैं। इनमें तेजी के साथ-साथ गिरावट भी उतनी ही तेज होती है। इसलिए यह हर निवेशक के लिए उपयुक्त नहीं हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आपका निवेश समय 7 से 10 साल या उससे ज्यादा है, तभी इस सेगमेंट में निवेश करना चाहिए।

एसआईपी और एसटीपी से एंट्री

स्मॉलकैप में एकमुश्त निवेश करने के बजाय एसआईपी या एसटीपी के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर रणनीति मानी जाती है। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और आप अलग-अलग स्तरों पर निवेश कर पाते हैं, जिससे औसत लागत संतुलित रहती है।

पोर्टफोलियो में सीमित हिस्सा

एक संतुलित निवेश रणनीति के तहत स्मॉलकैप फंड्स का हिस्सा पोर्टफोलियो में सीमित रखना चाहिए। आमतौर पर 10% से 20% तक का एक्सपोजर पर्याप्त माना जाता है, जो जोखिम और रिटर्न के बीच संतुलन बनाए रखता है। इसके अलावा, फ्लेक्सी कैप और मल्टीकैप फंड्स जैसे विकल्प भी बेहतर संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पीछे भागना क्यों खतरनाक

अक्सर निवेशक हालिया प्रदर्शन देखकर आकर्षित हो जाते हैं और तेजी से निवेश कर देते हैं। लेकिन 10% जैसे अल्पकालिक रिटर्न का पीछा करना सही रणनीति नहीं है। बाजार में ऐसे मूवमेंट अस्थायी होते हैं और समय के साथ संतुलित हो जाते हैं। इसलिए केवल हालिया रिटर्न देखकर निवेश करना नुकसान का कारण बन सकता है।

अवसर है, पर अलर्ट रहें

स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है, लेकिन इसे "पैसे छापने का मौका" मानना जल्दबाजी होगी। लंबी अवधि के निवेशक एसआईपी के जरिए इसमें धीरे-धीरे निवेश कर सकते हैं, लेकिन पोर्टफोलियो में संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है।

एमएफ के नाम में छिपा पूरा खेल : 'डायरेक्ट रेगूलर और ग्रोथ' का सही मतलब समझें

म्यूचुअल फंड में निवेश करना आजकल बहुत आसान हो गया है, लेकिन सही फंड का चुनाव करना आज भी कई लोगों के लिए बड़ी चुनौती है। बता दें कि जब आप किसी ऐप या वेबसाइट पर फंड सर्च करते हैं, तो एक ही नाम के कई ऑप्शन नजर आते हैं। दरअसल, इन नामों में निवेश की पूरी रणनीति छिपी होती है। अगर आप इन बेसिक शब्दों का मतलब समझ लेते हैं, तो आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार सही फंड का चुनाव कर सकते हैं।

निवेश की कैटेगरी को पहचानें

म्यूचुअल फंड के नाम की शुरुआत एएमसी से होती है, जैसे एसबीआई, अक्षम या आईसीआईसीआई प्रूडेंटियल। यह वो संस्था है जो आपके पैसे को मैनेज करती है। नाम के अगले हिस्से में फंड की कैटेगरी होती है। जैसे लार्ज कैप का अर्थ है कि पैसा देश की टॉप 100 सुरक्षित कंपनियों में लगेगा। वहीं, स्मॉल कैप या मिड कैप में पैसा उन कंपनियों में लगाया जाता है जो तेजी से बढ़ रही हैं, हालांकि इनमें जोखिम थोड़ा ज्यादा होता है।

खर्च और मुनाफे का अंतर

फंड के नाम में डायरेक्ट और रेगूलर सबसे अहम शब्द हैं। डायरेक्ट का मतलब है कि आप सीधे फंड हाउस के साथ निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई एजेंट नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम होता है और आपका मुनाफा बढ़ जाता है। इसके विपरीत, रेगूलर प्लान किसी बैंक या ब्रोकर के जरिए लिया जाता है, जहां आपको दी जाने वाली सुविधाओं के बदले कंपनी एजेंट को कमीशन देती है, जिससे आपका शुद्ध मुनाफा थोड़ा कम हो जाता है।

रिटर्न पाने का तरीका चुनें

नाम के आखिरी हिस्से में आपको ग्रोथ या आईडीडब्ल्यूसी लिखा मिलेगा। बता दें कि अगर आप लंबे समय के लिए पैसा जोड़ना चाहते हैं, ग्रोथ ऑप्शन चुनें क्योंकि इसमें मुनाफे पर कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपको निवेश के बीच-बीच में कुछ कमाई मिलती रहे, तो आईडीडब्ल्यूसी प्लान लिया जा सकता है।

स्मार्ट निवेशक बनने के लिए जरूरी टिप्स

म्यूचुअल फंड चुनते समय सिर्फ पिछले रिटर्न को ना देखें, बल्कि इन चारों यानी एएमसी, कैटेगरी, प्लान टाइप और रिटर्न मोड को परखें। अपनी रिस्क लेने की क्षमता और समय सीमा के आधार पर ही सही ऑप्शन का चुनाव करें। हमेशा कोशिश करें कि डायरेक्ट और ग्रोथ ऑप्संश पर गौर करें जिससे लंबी समय में आपकी जमा पूंजी पर कमीशन का बोझ न पड़े और आपको अधिकतम लाभ मिल सके। म्यूचुअल फंड का नाम भले ही जटिल लगे, लेकिन इसमें निवेश का पूरा ब्लूप्रिंट छिपा होता है। म्यूचुअल फंड में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप इन बुनियादी शब्दों को समझें और सोच-समझकर फैसला लें। सही जानकारी के साथ किया गया निवेश ही लंबे समय में संपत्ति निर्माण का मजबूत आधार बनता है।

बिजनेस डेस्क

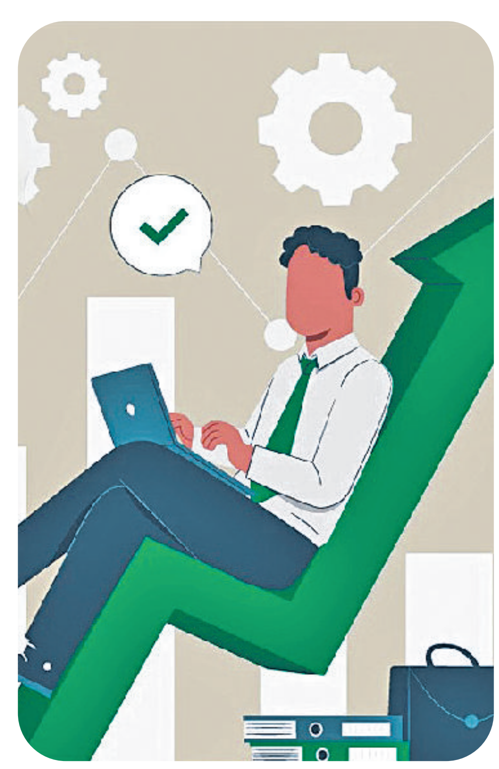

अब आईटीआर में गलती की तो पड़ सकती है भारी

गलत इनकम बताई तो 200% तक जुर्माना

- छोटी चूक भी बन सकती है बड़ी सजा का कारण
- जानबूझकर जानकारी छिपाने पर दोगुना तक जुर्माना
- लेट फाइलिंग व दस्तावेजों में कमी पर भी कड़ा प्रावधान

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न यानी आईटीआर भरना अब केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह जिम्मेदारी और सतर्कता का काम बन चुका है। आयकर विभाग ने असेसमेंट ईयर 2026–27 के लिए नया पेनल्टी फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसमें गलत जानकारी देने वाले टैक्सपेयर्स पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। इस नए सिस्टम का मकसद साफ है। टैक्स अनुपालन को सख्ती से लागू करना और किसी भी तरह की लापरवाही या हेरफेर को हतोत्साहित करना।

गलत इनकम दिखाना पड़ सकता है भारी

नए नियमों के तहत यदि कोई टैक्सपेयर्स अपनी वास्तविक आय से कम इनकम दिखाता है, तो उसे देय टैक्स पर 50 प्रतिशत तक जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह जुर्माना उन मामलों में लागू होता है जहां गलती को अनजाने में हुई चूक माना जाता है। लेकिन अगर जांच में यह साबित हो जाता है कि इनकम को जानबूझकर छिपाया गया है या गलत जानकारी दी गई है, तो सजा और भी कड़ी हो जाती है। ऐसे मामलों में पेनल्टी बढ़ाकर 200 प्रतिशत तक की जा सकती है। यानी जितना टैक्स बचाने की कोशिश की गई, उसका दोगुना तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

जानबूझकर गलती और सामान्य चूक में फर्क

सरकार ने इस बार नियमों में यह स्पष्ट किया है कि जानबूझकर की गई गलती और सामान्य त्रुटि में अंतर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने भूलवश कोई इनकम जोड़ना रह गया, तो उसे उतनी सख्ती से नहीं देखा जाएगा जितना कि किसी ऐसे मामले को जहां दस्तावेज छिपाए गए हों या फर्जी एंट्री की गई हो। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ईमानदार टैक्सपेयर्स को राहत मिलती है, जबकि धोखाधड़ी करने वालों पर सख्ती बढ़ती है।

लेट आईटीआर पर भी सख्त नियम

समय पर आईटीआर फाइल न करने पर भी अब जुर्माने का प्रावधान पहले से स्पष्ट और कड़ा कर दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति तय समय सीमा के बाद आईटीआर भरता है, तो उसे अधिकतम 5000 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। हालांकि, जिन टैक्सपेयर्स की सालाना आय 5 लाख रुपये तक है, उनके लिए राहत देते हुए जुर्माना 1000 रुपये तक सीमित रखा गया है। इसका उद्देश्य छोटे करदाताओं को अनावश्यक बोझ से बचाना है, लेकिन समय पर फाइलिंग की जिम्मेदारी से छूट नहीं दी गई है।

टीडीएस और अन्य दस्तावेजों में देरी भी महंगी

सिर्फ आईटीआर ही नहीं, बल्कि टीडीएस और अन्य जरूरी स्टेटमेंट समय पर जमा न करने पर भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। ऐसे मामलों में 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लगाया जा सकता है, जो समय के साथ बड़ी राशि में बदल सकता है। इससे साफ है कि टैक्स सिस्टम अब पूरी तरह समयबद्ध और अनुशासित हो चुका है, जहां हर देरी की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

टैक्स बकाया रखने पर भी कार्रवाई

यदि कोई व्यक्ति अपना सेल्फ-असेसमेंट टैक्स समय पर नहीं चुकाता है, तो उस पर भी पेनल्टी लग सकती है। यह पेनल्टी असेसिंग ऑफिसर द्वारा तय की जाती है और कई मामलों में बकाया टैक्स के बराबर तक हो सकती है। गंभीर मामलों में, खासकर जब जांच के दौरान छिपी हुई आय सामने आती है, तो 10 प्रतिशत से लेकर 60 प्रतिशत तक अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गलती कितनी गंभीर है और उसे कब उजागर किया गया।

अन्य उल्लंघनों पर कड़ी नजर

नए नियम केवल इनकम छिपाने तक सीमित नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने अकाउंट बुक्स ठीक से नहीं रखता, जरूरी ऑडिट नहीं कराता, दस्तावेज समय पर जमा नहीं करता या कैश ट्रांजेक्शन के नियमों का उल्लंघन करता है, तो उस पर भी जुर्माना लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में यह जुर्माना लेन-देन की पूरी राशि के बराबर तक हो सकता है, जो किसी भी व्यवसाय या व्यक्ति के लिए बड़ा वित्तीय झटका साबित हो सकता है।

राहत के प्रावधान भी मौजूद

हालांकि सख्ती के बीच सरकार ने कुछ राहत के विकल्प भी दिए हैं। यदि कोई टैक्सपेयर्स यह साबित कर देता है कि उससे हुई गलती किसी वाजिब कारण से हुई थी, जैसे तकनीकी समस्या या वास्तविक भूल, तो उस पर पेनल्टी नहीं लगाई जाएगी। इसके अलावा, कुछ मामलों में अपील और स्पष्टीकरण के आधार पर भी जुर्माने में राहत मिल सकती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ईमानदार करदाता अनावश्यक रूप से परेशान न हों।

सतर्कता ही बचाव का सबसे बड़ा तरीका

इन नए नियमों के बाद यह साफ हो गया है कि आईटीआर भरते समय लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर जानकारी को सही दस्तावेजों के साथ जांचकर ही भरना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि यदि टैक्स फाइलिंग को लेकर किसी भी तरह का संदेह हो, तो पेशेवर सलाह लेना बेहतर है। छोटी सी गलती भी बड़े जुर्माने में बदल सकती है, इसलिए सतर्क रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है।

आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश

नए पेनल्टी नियम यह संकेत देते हैं कि टैक्स सिस्टम अब ज्यादा पारदर्शी और सख्त हो चुका है। आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश है ईमानदारी से टैक्स भरें या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहें। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जल्दबाजी या लापरवाही से बचते हुए पूरी सावधानी के साथ आईटीआर फाइल किया जाए, क्योंकि अब छोटी गलती भी बड़ी सजा में बदल सकती है।

25,000 की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड ही काफी

छोटी एसआईपी में बंटवारे से कंपाउंडिंग पर पड़ता है असर

म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में भीड़ बढ़ाना पड़ सकता है भारी, घट सकता है रिटर्न

बिजनेस डेस्क

अक्सर निवेशक यह मान लेते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड्स में पैसा लगाने से जोखिम कम हो जाता है और रिटर्न बेहतर मिलता है। इसी सोच के चलते कई लोग 10 से 12 या उससे भी ज्यादा फंड्स में एसआईपी शुरू कर देते हैं। लेकिन हकीकत इससे उलट है। जरूरत से ज्यादा फंड्स रखने से न तो जोखिम कम होता है और न ही रिटर्न बढ़ता है, बल्कि आपका पोर्टफोलियो उलझ जाता है और मुनाफा कम हो सकता है। खासतौर पर अगर आपकी मासिक एसआईपी 25,000 रुपये के आसपास है, तो 3 से 5 अच्छे फंड्स का चयन ही बेहतर रणनीति मानी जाती है।

ज्यादा फंड्स रखना क्यों नुकसान का सौदा

म्यूचुअल फंड निवेश का मूल सिद्धांत है। विविधता, लेकिन कई निवेशक इस सिद्धांत को गलत तरीके से समझ लेते हैं। वे सोचते हैं कि अलग-अलग (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) के ज्यादा फंड्स खरीदना ही विविधता है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपके पास 10–12 फंड्स हैं, तो संभव है कि उनमें से कई एक ही सेक्टर या एक जैसे शेयरों में निवेश कर रहे हों। ऐसे में आपका पोर्टफोलियो देखने में तो बड़ा लगता है, लेकिन असल में वह विविध नहीं होता। विशेषज्ञ मानते हैं कि सीमित और चुने हुए फंड्स के जरिए बेहतर नियंत्रण और संतुलन बनाना ज्यादा आसान होता है। इससे निवेश की दिशा स्पष्ट रहती है और अनावश्यक जटिलता से बचाव होता है।

अलग नाम, लेकिन निवेश वही

जब आप कई फंड्स में निवेश करते हैं, तो एक बड़ी समस्या होती है—पोर्टफोलियो ओवरलैप। मान लीजिए आपने दो या तीन लार्ज-कैप फंड्स ले रखे हैं। इनमें से हर फंड में रिलायंस, इन्फोसिस या एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयर टॉप होल्डिंग में हो सकते हैं। इसका मतलब है कि आप अलग-अलग फंड्स के जरिए एक ही कंपनियों में बार-बार निवेश कर रहे हैं।

इससे दो नुकसान होते हैं

जोखिम कम होने की बजाय बढ़ सकता है, क्योंकि बाजार गिरने पर सभी फंड्स एक साथ प्रभावित होते हैं। आप हर फंड का अलग-अलग एक्सपेंस रेशियो (खर्च) भी देते हैं, जिससे कुल रिटर्न घटता है। इस तरह, ज्यादा फंड्स रखने से निवेश में विविधता का भ्रम तो बनता है, लेकिन असल फायदा नहीं मिलता।

छोटी एसआईपी से कंपाउंडिंग कमजोर

यदि 25,000 की मासिक एसआईपी को आप 8 या 10 फंड्स में बांटते हैं, तो हर फंड में बहुत कम राशि जाती है। उदाहरण के तौर पर 8 फंड्स में निवेश करने पर हर फंड में सिर्फ 3,125 ही जाएंगे। इतनी छोटी राशि में कंपाउंडिंग का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। लंबे समय में बड़ा कॉर्पस बनाने के लिए जरूरी है कि हर फंड में पर्याप्त निवेश हो, ताकि उसका ग्रोथ प्रभावी तरीके से दिखाई दे। अगर यही 25,000 रुपये आप 3 या 4 फंड्स में लगाते हैं, तो हर फंड में 6,000 से 8,000 रुपये तक का निवेश होगा, जिससे रिटर्न बेहतर तरीके से बढ़ सकता है।

ट्रैकिंग और मैनेजमेंट बन जाता है मुश्किल

ज्यादा फंड्स का एक और बड़ा नुकसान है—उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। हर फंड का प्रदर्शन अलग होता है। कुछ अच्छा रिटर्न देते हैं, तो कुछ कमजोर प्रदर्शन करते हैं। अगर आपके पास बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा फंड अच्छा कर रहा है और किसे बदलने की जरूरत है। इसके अलावा, कमजोर फंड्स आपके पूरे पोर्टफोलियो के रिटर्न को नीचे खींच लेते हैं। इसे "डाइल्यूशन" कहा जाता है। यानी अच्छे फंड्स का फायदा भी पूरी तरह नहीं मिल पाता।

आदर्श पोर्टफोलियो कैसा हो

विशेषज्ञों के अनुसार 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड्स का पोर्टफोलियो पर्याप्त होता है। इससे निवेश में संतुलन बना रहता है और जोखिम भी नियंत्रित रहता है। एक संतुलित पोर्टफोलियो के लिए आप इन कैटेगरी पर विचार कर सकते हैं।

- लार्ज-कैप या इंडेक्स फंड
  स्थिरता के लिए
- लार्ज एंड मिड-कैप फंड
  ग्रोथ और स्थिरता का मिश्रण
- मल्टी-कैप या फ्लेक्सी-कैप फंड
  अलग-अलग मार्केट कैप में निवेश
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड
  इक्विटी और डेट का संतुलन
- ईएलएसएस फंड (टैक्स सेविंग)
  टैक्स बचत के साथ निवेश
- हर निवेशक अपनी जोखिम क्षमता, लक्ष्य और समय अवधि के अनुसार इन कैटेगरी में 3–5 फंड्स चुन सकता है।

कैसे सुधारें अपना मौजूदा पोर्टफोलियो

अगर आपके पोर्टफोलियो में पहले से ही बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप इसे धीरे-धीरे सुधार सकते हैं। सबसे पहले, ओवरलैप चेक करें। इसके लिए कई ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि आपके फंड्स में कितनी समानता है। इसके बाद उन फंड्स को पहचानें जो लगातार 2–3 साल से अपने बेंचमार्क से कमजोर प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे फंड्स को धीरे-धीरे बाहर निकालें। ध्यान रखें कि एक ही कैटेगरी के कई फंड्स रखने से बचें। हर कैटेगरी से एक अच्छा और भरोसेमंद फंड चुनना बेहतर होता है। साथ ही, पोर्टफोलियो में बदलाव एकदम से न करें, बल्कि चरणबद्ध तरीके से करें ताकि बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम पड़े।

विविधता का सही मतलब समझें

असली विविधता का मतलब यह नहीं है कि आप ज्यादा से ज्यादा फंड्स खरीद लें। बल्कि इसका मतलब है कि आप अलग-अलग एसेट क्लास और कैटेगरी में निवेश करें। अगर आपने अलग-अलग कैटेगरी के 3–5 फंड्स चुने हैं, तो यह पर्याप्त विविधता देता है। इसके विपरीत, एक ही कैटेगरी के 8–10 फंड्स रखना सिर्फ जटिलता बढ़ाता है। इसलिए निवेश करते समय "कम लेकिन बेहतर" की रणनीति अपनाना ज्यादा समझदारी भरा कदम है।

यह रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड निवेश में संख्या नहीं, गुणवत्ता मायने रखती है। ज्यादा फंड्स रखने से पोर्टफोलियो मजबूत नहीं होता, बल्कि उलझन बढ़ती है और रिटर्न पर असर पड़ता है। 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 अच्छी तरह चुने गए फंड्स ही पर्याप्त हैं। इससे न केवल कंपाउंडिंग का फायदा बेहतर मिलता है, बल्कि निवेश को समझना और मैनेज करना भी आसान रहता है। अंततः, सफल निवेश वही है जो सरल, संतुलित और आपके लक्ष्यों के अनुरूप हो।

खबर संक्षेप

विश्व मलेरिया दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

नांगल चौधरी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम इंचार्ज डॉ. विकास कुमार टेकवानी निर्देशन में संपन्न हुआ। जिसमें स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को मलेरिया से बचाव के प्रभावी उपायों के प्रति जागरूक करना रहा। उन्होंने कहा कि मलेरिया संक्रमित मादा एनाफलीज मच्छर के काटने से फैलता है और समय पर इलाज न मिलने पर यह जानलेवा भी हो सकता है। इसलिए बचाव के लिए घरों के आसपास पानी जमा न होने दें। कार्यक्रम में मलेरिया के लक्षण अचानक तेज बुखार, सिरदर्द, उल्टी, ठंड लगना और कंपकंपी के बारे में भी जानकारी दी।

अटेली में घोड़ी पर बैठाकर निकाला बेटी का बनवारा

मंडी अटेली। समाज में बेटा-बेटी के बीच भेदभाव को खत्म करने का एक सशक्त संदेश उस समय देखने को मिला, जब एक बेटी का बनवारा घोड़ी पर निकाला गया। अटेली वार्ड नंबर 10 में पूर्व नगर पालिका वाईस चेयरमैन स्नेहलता ने अपनी बेटी अंजू की शादी से पहले यह अनोखी पहल करते हुए उसे घोड़ी पर बैठा कर बनवारा निकाला। स्नेहलता ने बताया कि उन्होंने बेटी को बेटों के समान शिक्षा और संस्कार दिए हैं। बेटी अंजू ने बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर परिवार का नाम रोशन किया है। उन्होंने कहा कि आज के समय में लड़का और लड़की में कोई अंतर नहीं रह गया है।

स्वास्थ्य जांच शिविर में निःशुल्क चेकअप

सतनाली मंडी। बाबा भैरव मंदिर परिसर सतनाली में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने लगभग 70 लोगों की जांच की। इस अवसर पर नवजीवन हॉस्पिटल से डॉ. सोनू यादव व महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीषा यादव ने मरीजों की जांच की और उन्हें उचित चिकित्सा सलाह दी। इस अवसर पर हॉस्पिटल के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. उमेश तंवर बसई ने बताया कि स्वास्थ्य जांच शिविर में बच्चों व महिलाओं से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

पक्षियों के लिए जल उपलब्ध अभियान चलाया

सतनाली मंडी। एबीवीपी सतनाली नगर इकाई की ओर से भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए जल उपलब्ध करवाने के लिए राजकीय महाविद्यालय में सकोरा अभियान चलाया गया। इस अवसर पर नगर अध्यक्ष डॉ. विपिन कुमार ने बताया कि गर्मियों के दौरान तापमान अत्याधिक बढ़ जाता है, जिससे पक्षियों को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ता है। इसी को ध्यान में रखते हुए एबीवीपी ने सकोरा अभियान चलाया है, ताकि विभिन्न स्थानों पर सकोरे रखकर पक्षियों के लिए पानी उपलब्ध कराया जा सके।

गर्मी में त्वचा रोग का बढ़ गया खतरा

मंडी अटेली। अग्रवाल सभा द्वारा निःशुल्क त्वचा परामर्श शिविर राधा कृष्ण मंदिर परिसर में लगाया गया। शिविर में 56 मरीजों ने जांच कराई, जिन्हें दवाइयां भी निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं। स्किन स्पेशलिस्ट डॉ. दीपक यादव ने अपनी टीम के साथ मरीजों की जांच की। शिविर में डॉ. दीपक यादव ने बताया कि मौसम में बढ़ती गर्मी और उमस के कारण त्वचा संबंधी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। पसीना, धूल और संक्रमण के चलते एलर्जी, खुजली व रैशेज जैसी समस्याएं आम हो जाती हैं।

कोर्ट परिसर में जान से मारने की धमकी

नारनौल। महावीर चौकी क्षेत्र में एक युवती को कोर्ट परिसर में गवाही देने के दौरान जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अटेली थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती 24 को एक गवाही देने के लिए अदालत पहुंची थी। युवती ने पुलिस को बताया कि वह वकील के चैंबर के बाहर बैठी थी, तभी आरोपित संदीप का भाई आया। उसने धमकाते हुए कहा कि यदि उसने उसके भाई के पक्ष में गवाही नहीं दी, तो कोर्ट से बाहर निकलते ही जान से मार देंगे।

दिन और रात के तापमान में हो रहा तेजी से इजाफा तपिश से आमजन परेशान

जिले में सताने लगी गर्मी, पारा पहुंचा 43 डिग्री सेल्सियस के पार, रात का तापमान भी 29 के ऊपर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

क्षेत्र में आग उगलने वाली गर्मी ने अपने तीखे तेवरों को अख्तियार किए हुए हैं। दिन व रात के पारा में उफान देखने को मिल रहा है, लेकिन आगामी दिनों में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। इस दौरान तेज गति की हवाओं, आंधी अंधड़ के साथ हल्की बारिश व बूंदा-बांदी की सम्भावना है। पश्चिमी गर्म मरूस्थलीय शुष्क हवाओं व सूर्य के तल्ख तेवरों ने सम्पूर्ण इलाके में तापमान में सामान्य से अधिक बने हुए और जलती तपती गर्मी अपने तीखे तेवरों से आगाज किए हुए हैं। हरियाणा एनसीआर दिल्ली में अधिकतर स्थानों पर दिन के तापमान 40.0 डिग्री सेल्सियस से 44.6 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया गया। कुछ स्थानों पर हीट वेव लूं की स्थिति बनी हुई है। शनिवार हरियाणा एनसीआर दिल्ली में सबसे ज्यादा गर्म दिन रोहतक का 44.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं दूसरी तरफ रात्रि तापमान भी 25.0 डिग्री सेल्सियस से 30.0 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया गया है। भिवानी में रात सबसे ज्यादा गर्म 30.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार आगामी दिनों में हरियाणा एनसीआर दिल्ली में मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। शनिवार को एक नया कमजोर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में बादलों की आवाजाही देखने को मिली। इस मौसम प्रणाली का असर शनिवार से रविवार रात्रि तक रहेगा। जिससे हरियाणा एनसीआर दिल्ली में तेज गति की हवाओं, आंधी अंधड़ के साथ बिखराव वाली हल्की बारिश तथा बूंदाबांदी की देखने को मिलेगी। इस मौसम प्रणाली से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में तापमान में ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिलेगी, केवल हल्की गिरावट ही होंगी। इस मौसम प्रणाली के पीछे पीछे एक नया पश्चिमी विक्षोभ 27 अप्रैल रात को उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों पर सक्रिय होने से उत्तरी राजस्थान व पश्चिमी हरियाणा पर एक चक्रवातीय सर्कुलेशन बनने से अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से प्रचुर मात्रा में नमी पहुंचने लगेगी। जिससे सम्पूर्ण इलाके में बादलों की आवाजाही में बढ़ोतरी व 40-50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने, आंधी अंधड़ के साथ हल्की बारिश तथा बूंदाबांदी की सम्भावना है।

नारनौल। सायं के समय आसमान में छाए बादल। फोटो : हरिभूमि

मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चन्द्र मोहन ने बताया कि भारतीय मौसम विभाग ने सम्पूर्ण इलाके पर येलो अलर्ट जारी कर दिया है। यह मौसम प्रणाली बढ़ते हुए तापमान को जरूर नियंत्रित करेंगी। जिसकी वजह से आमजन को कुछ राहत के आसार बन रहे हैं। अगर हवाओं की गति धीमी हुई तो हरियाणा एनसीआर दिल्ली में उमसभरी गर्मी अपने रंग दिखाती रहेगी। इसके पीछे पीछे 30 अप्रैल, इसके बाद दो मई व पांच मई पांच को भी एक बाद एक पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से हरियाणा एनसीआर दिल्ली में लगातार मौसम में बदलाव जारी रहेगा। जिले में नारनौल व महेंद्रगढ़ का दिन और रात का तापमान क्रमशः 43.5, 29.5 डिग्री सेल्सियस व 42.0 तथा 25.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

दूसरे दिन भी झाड़ू प्रदर्शन, स्थायीकरण व वेतन बढ़ोतरी की उठाई मांग

सड़क पर उतरे सफाई कर्मचारी, फायर कर्मियों की हड़ताल को दिया समर्थन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नगर परिषद में फायर कर्मचारियों की हड़ताल को अब सफाई कर्मचारियों का भी खुला समर्थन मिल गया है। नगर पालिका कर्मचारी संघ हरियाणा के आह्वान पर शनिवार को लगातार दूसरे दिन नगर परिषद परिसर में झाड़ू प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन की अध्यक्षता इकाई प्रधान भूपेंद्र सारवान ने की, जिसमें बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी और फायर विभाग के कर्मचारी शामिल हुए। प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को तुरंत लागू करने की मांग उठाई।

कार्यक्रम में सर्व कर्मचारी संघ के राज्य सचिव महेंद्र बोयत, जिला प्रधान कौशल यादव, अग्निशमन विभाग के इकाई प्रधान गुरदयाल सिंह सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे। इकाई प्रधान भूपेंद्र सारवान ने कहा कि फायर विभाग के कर्मचारियों के साथ लंबे समय से अन्याय हो रहा है, जिसे अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने मांग रखी कि कच्चे कर्मचारियों को तुरंत पक्का किया जाए और अग्निशमन विभाग के साथियों को न्याय दिया जाए। साथ ही हाल ही में शहीद हुए दोनों कर्मचारियों के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता, एक-एक सरकारी नौकरी और शहीद का दर्जा दिया जाए। उन्होंने कहा कि 10 नवंबर 2022 को हरियाणा सरकार और कर्मचारी संगठनों के बीच जो समझौता हुआ था, उसे अब तक लागू नहीं किया गया है, जिससे कर्मचारियों में भारी रोष है।

कर्मचारियों ने मांग की कि न्यूनतम वेतन 27 हजार रुपये किया जाए और सभी कच्चे कर्मचारियों को स्थायी किया जाए। इस मौके पर नगर पालिका कर्मचारी संघ के राज्य कैशियर महेंद्र सेंगलिया, जिला प्रधान राहुल सारवान, महावीर प्रसाद, भीम सिंह, जसवंत कुमार, संजय कुमार, सुनील कुमार, राकेश कुमार, सतपाल सिंह, संदीप कुमार, हरिओम, अजय कुमार, लीलाराम, प्रदीप कुमार सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी मौजूद रहे।सुप्रीम कोर्ट के कर्मचारियों के हित में दिए गए फैसलों को भी लागू किया जाना चाहिए। कर्मचारियों ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान सफाई कर्मचारियों और फायर कर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर जनता की सेवा की, लेकिन इसके बावजूद उन्हें आज तक स्थायी नहीं किया गया और न ही वेतन में उचित बढ़ोतरी की गई। इस कारण कर्मचारियों में गहरी नाराजगी है।

नारनौल। मांगों को लेकर झाड़ू प्रदर्शन करते पालिका सफाई कर्मचारी व दमकल कर्मी।

सरकार की आलोचना

सर्व कर्मचारी संघ के राज्य सचिव महेंद्र बोयत और जिला प्रधान कौशल यादव ने भी सरकार के रवैये की आलोचना करते हुए कहा कि कर्मचारी लंबे समय से अपनी मांगों को लेकर शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन कर रहे हैं, लेकिन सरकार उनकी समस्याओं को नजरअंदाज कर रही है।

आंदोलन करेंगे और तेज

प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने जल्द ही अपनी मांगों पर सकारात्मक कदम नहीं उठाया तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार को अपने अड़ियल रवैये में बदलाव करना होगा, अन्यथा इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

केंद्रीय विवि में पक्षियों के लिए रखे गए पानी के सकोरे

महेंद्रगढ़। भीषण गर्मी के इस दौर में जब इंसान अपनी प्यास बुझाने के साधन खोज लेता है, वहीं बेजुबान पक्षी एक-एक बूंद पानी के लिए भटकते रहते हैं। उनकी इसी मौन पीड़ा को महसूस करते हुए महेंद्रगढ़ स्थित हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में एनएसएस और एनिमल वेलफेयर क्लब एवं ग्रीन कैंपस क्लीन कैंपस क्लब द्वारा सार्थक पहल के अंतर्गत पूरे विश्वविद्यालय परिसर में पक्षियों के लिए पानी के सकोरे और आशियाने लगाए गए। इस पुनीत कार्य का शुभारंभ कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार, प्रो. वाइस चांसलर डॉ. पवन कुमार शर्मा, प्रोफेसर सुनीता श्रीवास्तव एवं रजिस्ट्रार डॉ. सुनील कुमार द्वारा स्वयं सकोरे में पानी भरकर और आशियाने लगाकर किया गया, जो मानवता और करुणा का जीवंत उदाहरण बना। इसके पश्चात एनएसएस एवं एनिमल वेलफेयर क्लब के स्वयंसेवकों ने पूरे परिसर में घूम-घूमकर सकोरे और पक्षियों के घर स्थापित किए, ताकि तपती धूप में प्यास से तड़पते ये नन्हे जीव राहत महसूस कर सकें। इस अभियान में आईसीटीम फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा। कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि यह पहल हमारी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रतीक है।

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विवि परिसर में पानी के सकोरे रखते हुए।

पुलिस ने अवैध बजरी से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली पकड़ी

महेंद्रगढ़। जिला क्षेत्र में अवैध खनन और माइनिंग गतिविधियों पर नकेल कसते हुए थाना सदर पुलिस ने कार्रवाई की है। एसपी दीपक के सख्त दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए, पुलिस टीम ने अवैध बजरी से भरी एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, पुलिस की डायल 112 टीम अपने निर्धारित क्षेत्र में नियमित गश्त कर रही थी। इसी दौरान टीम ने ऊंची भांडोर क्षेत्र में एक संदिग्ध ट्रैक्टर-ट्रॉली को रुकवाया, जिसमें बजरी भरी हुई थी। मामले की गंभीरता और चालक के पास वैध दस्तावेज न होने की स्थिति को देखते हुए, टीम ने तुरंत इसकी सूचना थाना सदर को दी। सूचना मिलते ही थाना सदर की पुलिस टीम मौके पर पहुंची और वाहन को अपने कब्जे में ले लिया। प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई कि इस अवैध बजरी का खनन खेड़की नदी क्षेत्र से किया गया था और इसे चोरी-छिपे परिवहन कर आगे ले जाया जा रहा था। इसके पश्चात, पुलिस टीम ने नियमानुसार त्वरित कार्रवाई करते हुए खनन विभाग के अधिकारियों को सूचित किया।

प्रदूषण बोर्ड ने नष्ट करवाया 225 किलो प्लास्टिक कचरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पर्यावरण को बचाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए क्षेत्र से भारी मात्रा में प्रतिबंधित प्लास्टिक कचरे का निपटान किया है। विभाग की ओर से चलाए गए विशेष अभियान के दौरान लगभग 225 किलोग्राम एकल उपयोग प्लास्टिक एकत्रित किया गया था। इसे शनिवार को सुरक्षित तरीके से मुरथल स्थित कचरे से ऊर्जा बनाने वाले संयंत्र में भेज दिया गया है। वहां इस कचरे का वैज्ञानिक विधि से निस्तारण किया जाएगा और इसका उपयोग बिजली उत्पादन के लिए होगा। यह पूरी कार्रवाई राज्य में प्लास्टिक पर लगे प्रतिबंध को कड़ाई से लागू करने और प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से की गई है। प्रदूषण बोर्ड की टीमें लगातार क्षेत्रों का निरीक्षण कर रही हैं और लोगों को जागरूक करने के साथ साथ नियमों का उल्लंघन करने वालों पर सख्ती भी बरत रही हैं। इसी कड़ी में जब्त किए गए इस कचरे को ऐसे स्थान पर भेजा गया है, जहां यह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के बजाय ऊर्जा का स्त्रोत बनेगा। महेंद्रगढ़ के क्षेत्रीय अधिकारी विजय चौधरी ने बताया कि विभाग का मुख्य लक्ष्य पूरे क्षेत्र को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करना है।

नारनौल। पिकअप में प्लास्टिक कचरा डालते हुए। फोटो : हरिभूमि

आस्था गुरुदत्त आर्य ने शांति पाठ एवं प्रार्थना कर सभी की खुशहाली की कामना की

बाबा ने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का किया कार्य

धनौंदा में सत्यवादी बाबा कर्णसिंह की 31वीं पुण्यतिथि मनाई, किया हवन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सत्यवादी बाबा कर्णसिंह की 31वीं पुण्यतिथि पर गांव धनौंदा बस स्टैंड पर स्थित कर्णचित्रा धर्मशाला में हवन यज्ञ व प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बाबा के सैकड़ो प्रशंसकों, अनुयायियों व ग्रामीणों ने हवन में आहुति डालकर तथा कर्णचित्रा धर्मशाला स्थित उनके पावन स्मृति स्थल पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर आर्य समाज धनौंदा खरकड़ा बास के प्रधान संतलाल आर्य यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उपस्थित थे। यज्ञ के उपरांत उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए संतलाल आर्य ने कहा कि सत्यवादी बाबा कर्णसिंह ने सदा सत्यपथ का अनुगमन किया। स्वार्थ के लिए भी कभी असत्य भाषण नहीं किया। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वास के विरुद्ध कार्य किया। समाजसेवी ठाकुर राजेंद्र सिंह नंबरदार ने कहा कि बाबा कर्णसिंह दीन, दुखी, निर्बलों, दलितों और पिछड़ों के मसीहा थे, जो भी फरियाद लेकर बाबा के पास आता था बाबा उसकी हरसंभव मदद करते थे। आचार्य आशुतोष शास्त्री ने कहा कि बाबा समावेशी स्वभाव के व्यक्ति थे। खुद पीड़ा और अपमान सहकर भी दूसरों की सहायता करते थे। सदा सत्य बोलते थे तथा सभी को सत्य बोलने की प्रेरणा देते थे। कैलाश सेठ ने कहा कि बाबा सभी को साथ लेकर चलने वाले इंसान थे। अनेक उलझे हुए मामलों को बाबा ने अपनी न्यायप्रियता और सत्यवादिता से उलझा कर दोनों पक्षों को एक साथ खड़ा कर दिया था। प्रमुख समाजसेवी नेताजी अतरलाल एडवोकेट ने कहा कि बाबा बहुत सफाई पसंद व्यक्ति थे। उनका मानना था कि स्वच्छता हमें ईश्वर के नजदीक ले जाती है। उन्होंने बाबा के जीवन से जुड़े अनेक संस्मरण सुनाकर उपस्थित व्यक्तियों को भाव विभोर कर दिया। अंत में गुरुदत्त आर्य ने शांति पाठ एवं विभिन्न प्रार्थनाएं कर सभी की खुशहाली और तरक्की की कामना की।

नारनौल। धनौंदा में बाबा कर्णसिंह के स्मृति स्थल पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर ठाकुर राजेंद्र सिंह नंबरदार, संतलाल आर्य, कैलाश सेठ, आशुतोष शास्त्री, गुरुदत्त आर्य, डॉ. सत्येंद्र सिंह, सतीश कुमार, मंजीत गौड़, राकेश यादव, पवन धनखड़, राजवीर सिंह, अत्तरपाल, सुरेश यादव, शेरसिंह बाल्मीकि, दीपक, मोनू, विक्रम शेखावत, महेश, राजकुमार, सोनू चौहान सहित बाबा के सैकड़ों अनुयायी, ग्रामीण और मौजीजान उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

स्व-गणना अभियान को सफल बनाने के लिए सतनाली में निकाली जागरूकता रैली

महेंद्रगढ़। स्व-गणना जागरूकता अभियान के तहत शनिवार को सतनाली में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एलएनबी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय व पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने सतनाली में जागरूकता रैली निकालकर आमजन को स्व गणना के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर महेंद्रगढ़ एसडीएम योगेश सैनी आईएएस ने जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। एसडीएम योगेश सैनी ने कहा कि देश की पहली डिजिटल जनगणना को सफल बनाने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपना विवरण ऑनलाइन पोर्टल पर दर्ज कर अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस बार नागरिक घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं, जिससे प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और सटीक बनेगी। गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार राज्य में स्व-गणना का कार्य 16 अप्रैल से प्रारंभ हो चुका है।

उन्हाणी कॉलेज की दो छात्राएं आईजीयू में टॉप

कनीना। राजकीय कन्या महाविद्यालय उन्हाणी की छात्राओं ने एक बार फिर परचम लहराते हुए इतिहास रचने में कामयाबी हासिल की है। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर की ओर से बीए प्रथम वर्ष के पहले सेमेस्टर की परीक्षा में महाविद्यालय की दो छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालय मेरिट सूची में प्रथम व द्वितीय स्थान हासिल किया है। शनिवार को महाविद्यालय में आयोजित फेयरवेल पार्टी के समय दोनों मेधावी छात्राओं को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह ने स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय की मेधावी छात्रा आरजू वासी पोता ने कड़ी मेहनत अनुशासन और समर्पण के बल पर प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। वहीं सोनिया वासी खेड़ी तलवाना ने द्वितीय स्थान हासिल कर उत्कृष्ट सफलता अर्जित की। प्राचार्य प्रो. विक्रम सिंह ने कहा कि छात्राओं की मेहनत, अनुशासन और शिक्षकों के मार्गदर्शन के कारण महाविद्यालय ने पिछले आठ वर्षों में चार बार विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

सिहमा में छात्रों ने संभाली पर्यावरण की जिम्मेदारी

मंडी अटेली। पर्यावरण संरक्षण और हरित भविष्य के संकल्प को साकार करने की दिशा में केंद्रीय विश्वविद्यालय जाट-पाली की एनएसएस यूनिट एवं राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल सिहमा की एनएसएस यूनिट द्वारा संयुक्त रूप से सामूहिक पौधारोपण अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अभियान के तहत स्कूल परिसर और आसपास के क्षेत्रों में छायादार, फलदार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि पौधारोपण केवल एक दिन की औपचारिकता नहीं, बल्कि पौधों की नियमित देखभाल और संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। पेड़-पौधे न केवल वातावरण को शुद्ध करते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान एनएसएस स्वयंसेवकों ने पर्यावरण जागरूकता का संदेश देते हुए आमजन से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी देखभाल करने का आह्वान किया।

आंगनबाड़ी केंद्र में मनाया विश्व मलेरिया दिवस

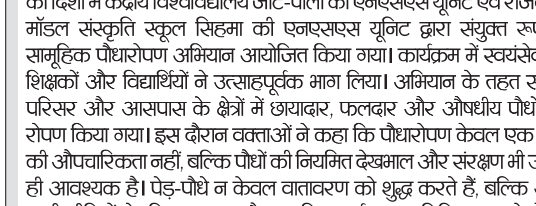

महेंद्रगढ़ । गांव चामधेड़ा की आंगनबाड़ी केंद्र में स्वास्थ्य विभाग की टीम की ओर से विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया। कार्यक्रम मे मुख्यातिथि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नांगल सिरोही के सीनियर चिकित्सा अधिकारी डॉ. रामनिवास डहिनवाल रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. चंद्रपाल नें की। स्वास्थ्य कर्मी अनूप रिवासा ने कहा की मलेरिया एक जानलेवा बीमारी है, जो मादा एनाफलीज मच्छर के काटने से होती है। यह मच्छर गंदे पानी में पनपता है और आमतौर पर रात के समय काटता है। प्रारंभिक लक्षण में मरीज को सर्दी के साथ बुखार होना, सिर दर्द, उल्टी होना व पसीने के साथ बुखार का उतरना आदि होते है। उन्होंने कहा की मलेरिया से बचाव के लिए हम अपने आसपास सफाई रखें, पूरी बाजू के कपडे पहने, घर के दरवाजों पर जाली लगवाए और नालियों को साफ रखें, ताकि मच्छर ना पनप पाए। डॉ. चंद्रपाल ने बताया की कोई भी बुखार मलेरिया हो सकता है, इसलिए बुखार होते ही रक्त पट्टीका बनवाएं, ताकि समय रहते बीमारी का पता चल सके और इलाज शुरू किया जा सके।

पीएमश्री स्कूल में हीट वेब से बचाव पर संगोष्ठी

नांगल चौधरी। पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नायन में जिला आयुर्वेद अधिकारी के मार्गदर्शन में हीट वेब से बचाव पर जागरूकता संगोष्ठी आयोजित की गई। प्राचार्य डॉ. महिपाल सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में राजकीय आयुर्वेद औषधालय के चिकित्सा अधिकारी डॉ. ललित मोहन जोशी ने हीट वेव के लक्षण और बचाव संबंधी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सुबह 10 बजे से शाम पांच बजे तक तेज धूप में बाहर निकलने से बचना जरूरी है। जरूरी होने पर सिर और गर्दन को ढककर ही बाहर जाएं। साथ ही शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए बेल का शरबत, आम पन्ना, सत्तू, नारियल पानी, खीरा, ककड़ी और तरबूज जैसे ठंडी तासीर वाले खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

खबर संक्षेप

सरस्वती स्कूल में सेमिनार 27 को

महेंद्रगढ़। गांव माजरा कलां स्थित सरस्वती शिक्षा निकेतन स्कूल में 27 अप्रैल को एक सेमिनार का आयोजन किया जाएगा। आरआरसीएम ग्रुप चेयरमैन रोशनलाल यादव ने बताया कि विद्यालय में बीआरओ भर्ती कार्यालय चरखी दादरी की ओर से विद्यालय कैंपस में एक सेमिनार आयोजित करेंगा। जिसमें विद्यार्थियो को देश सेवा के प्रति जागरूक किया जाएगा। इस अवसर पर मा. भगवान सिंह, भूतपूर्व सैनिक सतीश, सज्जन, सुबेसिंह, कप्तान सूबेसिंह, राजकुमार व अन्य सभी भूतपूर्व सैनिक मौजूद रहेंगे।

अरावली में हुई हिंदी लेखन प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। अरावली इंटरनेशनल स्कूल में इंटरहाउस हिंदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें सभी हाउस के बच्चों ने हिस्सा लिया और अपने विचार को सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया। विभिन्न विषय पर बच्चों की रचनात्मक और लेखन कौशल देखने को मिला। प्रतियोगिता में दूसरी व तीसरी कक्षा के विजेता छात्र यश व अंशिका हिमांशी काव्या रहे, चौथी से छठी कक्षा के विजेता छात्र लक्ष्य, काव्या, रियू, अन्नु, रिशिका व सातवी से आठवीं कक्षा के विजेता छात्र तरुण, मानवी, लक्ष्य प्रथम स्थान पर रहे। हिंदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन संजय, मनोज, प्रवीण, धर्मेन्द्र आदि अध्यापकों ने किया। स्कूल संचालक अशोक कुमार यादव ने सभी प्रतिभागी व विजेता टीम के छात्रों को बधाई दी।

गोसम्मान दिवस को लेकर अभियान तेज

कनीना। देशभर में गोसंरक्षण व गोसम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गोसम्मान अभियान के तहत 27 अप्रैल सोमवार को गोसम्मान दिवस मनाया जाएगा। इसी कड़ी में सोमवार सुबह सवा नौ बजे बाबा मोलडनाथ मंदिर प्रांगण में नागरिक एकत्रित होंगे तथा पदयात्रा के माध्यम से भजन कीर्तन करते हुए एसडीएम कार्यालय पहुंचेंगे। जहां गोसम्मान को लेकर ज्ञापन सौंपा जाएगा। कपूरी स्थित मनसा दास मंदिर के महंत रामभजन दास ने बताया कि यह अभियान सेवा, सुरक्षा और सम्मान जैसे मूल्यों पर आधारित है।

जनगणना के लिए लोगों को किया जागरूक

कनीना। गांव गुढ़ा में शनिवार को शिविर आयोजित कर ग्रामीणों को स्व गणना पोर्टल के प्रति जागरूक किया गया। जिसमें जनगणना मिशन के जिला स्तरीय प्रशिक्षक प्रो. हरिओम भारद्वाज व प्रो. संदीप यादव ने उपस्थित ग्रामीणों को स्व गणना पोर्टल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि स्व गणना के दौरान एकत्रित की जाने वाली सभी जानकारियां पूरी तरह गोपनीय रखी जाएंगी और उनका उपयोग केवल सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए किया जाएगा।

पुरानी रंजिश के चलते लाठी-डंडों और गाड़ी से कुचलकर की वारदात

नायन गांव हत्याकांड में एक आरोपित गिरफ्तार, अन्य साथियों की तलाश जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नांगल चौधरी थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव नायन में हुई युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस को दी गई शिकायत में गांव नायन निवासी कृष्ण ने बताया कि 21 अप्रैल को परिवार की एक बेटी की शादी के दौरान जब वे बारात का स्वागत कर रहे थे, तभी नांगल चौधरी की तरफ से आई कैम्पर गाड़ियों ने उनके भतीजे यादराम को जानबूझकर टक्कर मारी। इसके बाद गाड़ियों से उतरे हथियारबंद लोगों ने यादराम और अन्य लोगों पर लाठी डंडों व लोहे की रॉड से जानलेवा हमला कर दिया और हथियार लहराते हुए जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। सिर में गंभीर चोटें आने व गाड़ी से कुचले जाने के कारण यादराम की मृत्यु हो गई। इस शिकायत के आधार पर पुलिस ने नामजद व अन्य अज्ञात के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की हत्या व अन्य गंभीर धाराओं व आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है।

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपी। फोटो : हरिभूमि

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक ने आरोपितों की तत्काल धरपकड़ के कड़े निर्देश दिए और मामले की जांच सीआईए को सौंप दी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशों पर तेजी से काम करते हुए सीआईए ने 23 अप्रैल की देर शाम इस वारदात में शामिल एक आरोपित देशराज निवासी कालबा को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है और उससे सख्ती से पूछताछ की जा रही है। प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई है कि आरोपितों की मृतक के किसी साथी के साथ पुरानी रंजिश थी, जिसके चलते जब उन्होंने यादराम को मौके पर देखा तो इस जघन्य वारदात को अंजाम दिया। पुलिस की टीमें फरार अन्य नामजद व अज्ञात आरोपितों के संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही हैं और जल्द ही सभी संलिप्त आरोपितों को गिरफ्तार किया जाएगा।

अप्रैल माह में अब तक 15 पीओ गिरफ्तार

अप्रैल माह में अब तक कुल 15 उद्घोषित अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है। इन अपराधियों में एक ऐसा शातिर भगोड़ा भी शामिल है, जिसकी तलाश राजस्थान पुलिस को थी। पुलिस की इस व्यापक धरपकड़ में काबू किए गए ये सभी अपराधी जघन्य अपराधों, सेंधमारी व चोरी, सड़क दुर्घटनाओं और एनआई एक्ट सहित विभिन्न गंभीर मामलों में संलिप्त रहे हैं तथा लंबे समय से न्यायालय की प्रक्रिया से बचकर फरार चल रहे थे।

हत्या के मामले में 1 और आरोपित गिरफ्तार

निजामपुर थाना पुलिस ने गांव मूसनौता में पुष्कर नामक व्यक्ति की हत्या के मामले में एक और आरोपित बिरेंद्र सिंह वासी मूसनौता को गिरफ्तार किया है। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। पुलिस की ओर से आरोपित से सख्ती से पूछताछ की जा रही है। पुलिस ने इस मामले में कार्रवाई करते हुए अबतक कुल पांच आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है। बता दें कि छह मार्च की रात को सादा की ढाणी निवासी पुष्कर पर मूसनौता बस स्टैंड के पास बदमाशों ने कैंपर गाड़ियों से टक्कर मारकर हमला किया था। आरोपितों ने लोहे की रॉड और डंडों से हमला कर पुष्कर की हत्या कर दी थी। पुलिस ने मृतक के भाई सुभाष की शिकायत पर मामला दर्ज कर गहन जांच शुरू की थी। इस मामले में पुलिस ने चार आरोपितों को पहले गिरफ्तार किया था। प्रारंभिक पूछताछ में खुलासा हुआ था कि आपसी कहासुनी और पुरानी रंजिश के कारण इस वारदात को अंजाम दिया गया था।

महेंद्रगढ़। टॉप रहने वाले विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

नेशनल यूथ कॉमर्स ओलंपियाड में आरपीएस का दबदबा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आरपीएस के चार विद्यार्थियों ने नेशनल यूथ कॉमर्स ओलंपियाड में सीनियर व जूनियर ग्रुप में ऑल इंडिया रैंक दो व एक विद्यार्थी ने रैंक तीन हासिल राष्ट्रीय पटल अपना नाम रोशन किया है। द इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित नेशनल यूथ कॉमर्स ओलंपियाड में आरपीएस महेंद्रगढ़ के दो, नारनौल के एक व करनाल के एक विद्यार्थी ने ऑल इंडिया रैंक दो व रेवाड़ी के एक विद्यार्थी ने ऑल इंडिया रैंक तीन प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। वहीं आरपीएस महेंद्रगढ़ के पांच व आरपीएस बहरोड के एक विद्यार्थी ने ऑल इंडिया के टॉप 100 में भी अपना नाम दर्ज करवाया। ऐतिहासिक उपलब्धि पर आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजीनियर मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने बधाई देते हुए उनके उज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने इसे संस्थापक निदेशक स्व. डॉ. ओपी यादव के विजन और विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम का परिणाम बताया।

50-50 हजार व 25 हजार रुपये से होंगे सम्मानित

इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में सीनियर ग्रुप से नवरत्न और जूनियर ग्रुप से प्रभात जोशी, रौनक गुप्ता व हेमांग बंसल ने देशभर के हजारों प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए द्वितीय स्थान व सेजल भारद्वाज ने ऑल इंडिया रैंक 3 प्राप्त की है। इस ऐतिहासिक सफलता के लिए चारों छात्रों को आईसीएआई द्वारा 50-50 हजार रुपये व सेजल को 25 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही आरपीएस महेंद्रगढ़ के पांच विद्यार्थी हना यादव, निशा, स्पर्श सिंघल, नमन और सक्षम गोयल व आरपीएस बहरोड के अमन कुमार ने भी अपनी मेधा का परिचय देते हुए पूरे भारत मे टॉप में जगह बनाते हुए सांत्वना पुरस्कार की सूची में अपना नाम शामिल करवाया।

महेंद्रगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हैप्पी स्कूल का विज्ञान ओलंपियाड में शानदार प्रदर्शन

महेंद्रगढ़। आईओएस सिल्वर्जोन फाउंडेशन द्वारा आयोजित विज्ञान ओलंपियाड में हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के 34 विद्यार्थियों ने जोनल स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर 500-500 का नकद पुरस्कार अर्जित किया, वहीं राष्ट्रीय स्तर पर इनका स्थान चौथा रहा, जो विद्यालय के लिए गर्व का विषय है। स्कूल स्तर पर भी विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए 98 विद्यार्थियों ने गोल्ड मेडल प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि 23 विद्यार्थियों ने सिल्वर मेडल और 10 विद्यार्थियों ने ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किए। इस शानदार सफलता के पीछे विद्यालय के विज्ञान विषय के समर्पित अध्यापक-अध्यापिकाओं का विशेष योगदान रहा, जिनके कुशल मार्गदर्शन एवं निरंतर प्रयासों से विद्यार्थियों ने यह मुकाम हासिल किया। विद्यालय प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल, प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल, मैनेजर चंचल अग्रवाल, संचालक सुभाष चंद्र अग्रवाल तथा उपसंचालिका कौशल्या अग्रवाल ने सभी विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए प्रेरित किया।

नांगल कालिया स्कूल जिला विजेता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

विभागीय कमेटी ने स्कूल सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता का परिणाम घोषित कर दिया है। जिसमें राजकीय प्राथमिक पाठशाला नांगल कालिया ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान हासिल किया है। विजेता स्कूल को प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में आवेदन करने के लिए आमंत्रित किया है। इस उपलब्धि पर हेडमास्टर वेदप्रकाश ने बैठक का आयोजन करके आधुनिक तकनीक से पढ़ाई कराने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि संस्था के सौंदर्यीकरण मिशन में स्कूल स्टॉफ व बच्चों का बड़ा योगदान होता है। सामूहिक प्रयासों से परिसर की स्वच्छता, आकर्षक रंग रोगन, सुव्यवस्थित व्यवस्था और पौधारोपण संभव हो पाया है। स्कूल के वातावरण को साफ सुथरा बनाने के साथ बच्चों के लिए प्रेरणादायक व सकारात्मक भी बनाया गया है। ब्लॉक लेवल की स्पर्धा में 10 से अधिक विभागीय संस्थाओं ने पंजीकरण कराया था, लेकिन नांगल कालिया विद्यालय ने अपनी उत्कृष्ट तैयारी और प्रस्तुति से सभी को पीछे छोड़ दिया तथा जिले में प्रथम स्थान अर्जित किया है। उन्होंने बाताया कि सफलता में पूर्व मुख्य शिक्षक इंद्रजीत का मार्गदर्शन इस उपलब्धि का मुख्य आधार रहा है। शिक्षक रोहित कुमार ने स्कूल के भवनों की सजावट में अहम योगदान दिया है। इसके अलावा एसएमसी प्रधान जयकिशन ने कहा कि पुरस्कार राशि मिलने पर विद्यार्थियों की मूलभूत सुविधाओं पर खर्च किया जाएगा। इस संदर्भ में खंड शिक्षा अधिकारी विकास जयदीप ने बताया कि कमेटी ने निर्धारित मापदंडों का अवलोकन किया है। जिसमें नांगल कालिया की प्राथमिक पाठशाला उत्तीर्ण रही है। स्कूल को जल्द ही पुरस्कार राशि से सम्मानित किया जाएगा।

नांगल चौधरी। सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता में विजेता होने पर खुशी व्यक्त करते विद्यार्थी व शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

न्यूज डायरी

वैश्विक शांति के लिए स्प्रिंग फील्ड स्कूल में हवन

नारनौल। शहर के मौहल्ला रावका स्थित स्प्रिंग फील्ड स्कूल में शांति हवन का आयोजन किया गया। स्कूल संचालक भीमसेन शर्मा ने बताया कि वैश्विक शांति और अमन की मंगल कामना के चलते इस हवन में यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में आचार्य रामसिंह मधुर ने भाग लिया। यज्ञ में यजमान स्कूल संचालक भीमसेन शर्मा व उनकी पत्नी पत्नी सुनीता शर्मा रहे। सभी अध्यापकों ने भी इस यज्ञ मे आहुति डाली। आचार्य रामसिंह मधुर व भीमसेन शर्मा ने सभी विद्यार्थियों को हवन के महत्व और उनकी शुद्धता के बारे में बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कारों को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों को तिलक व मौली के महत्व को समझाया तथा संस्कार संबंधित बातें बताई।

क्विज प्रतियोगिता में 'टीम बी' रही विजेता

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में शनिवार गतिविधि के अंतर्गत एक क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों को चार टीमों में विभाजित किया गया, जिन्होंने पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में विभिन्न राउंड आयोजित किए गए, जिनमें सामान्य ज्ञान, विज्ञान, खेल और करंट अफेयर्स से संबंधित प्रश्न पूछे गए। प्रत्येक राउंड में टीमों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा और ज्ञान का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अंत में शानदार प्रदर्शन कर टीम बी जिसमें हर्ष, नवयुग, गर्वित व रिया प्रथम स्थान, टीम डी जिसमें विदिप, हिमांशु, माही और शशांक द्वितीय स्थान, टीम ए जिसमें आंजनेय, परी, हर्शिल, लक्ष्य तृतीय स्थान पर रहे। ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि आज यदुवंशी स्कूल में आयोजित इस क्विज प्रतियोगिता को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आप सभी विद्यार्थियों ने जिस उत्साह और आत्मविश्वास के साथ इसमें भाग लिया, वह वास्तव में सराहनीय है।

सीएल स्कूल में हुई अंग्रेजी पठन प्रतियोगिता

नारनौल। हुडा स्थित सीएल पब्लिक स्कूल में छात्रों के सर्वांगीण विकास और भाषा कौशल को सशक्त बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजी पठन प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधक डॉ. अमित गुप्ता व प्राचार्य रविन्द्र सिंह ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। विद्यार्थियों ने स्पष्ट उच्चारण, उचित गति, भावपूर्ण अभिव्यक्ति व आत्मविश्वास के साथ पाठ का वाचन किया, जिससे उनकी तैयारी और मेहनत साफ दिखाई दी। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित विद्यार्थियों ने अपने साथियों का उत्साहवर्धन किया, जिससे वातावरण सकारात्मक और प्रेरणादायक बना रहा।

कुरावहटा से जेरपुर तक की जर्जर सड़क में हो रहे हादसे, सांसद को भेजा पत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

कुरावहटा से जेरपुर जर्जर रोड को बनवाने के लिए उम्मीद जन फाउंडेशन ने सांसद चौधरी धर्मबीर को एक पत्र भेजा हैं। उम्मीद जन फाउंडेशन के उपप्रधान संदीप फौजी ने बताया कि महेंद्रगढ़ से कुरावहटा से जेरपुर रोड जिसकी लगभग नौ किलोमीटर दूरी हैं। इस रोड पर क्रेशर जोन के प्रतिदिन एक हजार से ज्यादा वाहन चलने के कारण रोड पूरी तरह जर्जर चुका है। इस रोड को नया, चौड़ाई व हैवी मैटिरियल से बनाया जाए, ताकि दुर्घटना पर अंकुश लग सके। पिछले एक साल से क्रेशर जोन के ओवरलोड वाहनों चलते रोड खत्म हो गया है। यह रोड लगभग पांच साल पहले बना था, इसके बारे में फिल्ड के सभी अभियंता को अवगत करवाया जा चुका है, परंतु अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इस रोड को नया, चौड़ाई व हैवी मैटिरियल से बनाया जाए। जर्जर रोड होने के चलते आए दिन वाहन चालक हादसे का शिकार हो रहें हैं। जर्जर सड़क के कारण लोगों के वाहन भी क्षतिग्रस्त हो रहें हैं। खासकर दोपहिया वाहन चालकों के लिए यह स्थिति और अधिक जोखिम भरी बन गई है।

महेंद्रगढ़। कुरावहटा से जेरपुर तक जर्जर सड़क।

ग्रामीणों का कहना है कि लंबे समय से सड़क की मरम्मत नहीं होने के कारण हालत लगातार खराब होती जा रही है। भारी वाहनों की आवाजाही के चलते सड़क की परत कई जगह से उखड़ चुकी है और गड्ढे लगातार गहरे होते जा रहे हैं। सुबह-शाम इस मार्ग से हजारों वाहन गुजरते हैं, ऐसे में अगर समय रहते सड़क का कार्य शुरू नहीं कराया गया तो कोई बड़ा हादसा हो सकता है। लोगों ने संबंधित विभाग से जल्द से जल्द सड़क की सड़क बनाने की मांग की है, ताकि राहगीरों और वाहन चालकों को सुरक्षित आवागमन मिल सके।

सरकार की चुप्पी से जेजेपी में रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला के साथ दुर्व्यवहार करने वाले सीआईए इंचार्ज पर सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। जिससे सरकार के साजिश में शामिल होने की आशंका बढ़ गई है। आक्रोशित जेजेपी कार्यकर्ताओं ने हिसार में महापंचायत करने का निर्णय लिया है। नांगल चौधरी हलके से हजारों कार्यकर्ता सोमवार सुबह महापंचायत के लिए रवाना होंगे। उक्त जानकारी जेजेपी के हलका प्रधान एडवोकेट प्रमोद ताखर व प्रदेश सचिव हजारीलाल लंबोरा ने सिरोही बहाली में वर्कर बैठक के दौरान दी। उन्होंने बताया कि एक पूर्व डिप्टी सीएम के साथ इस तरह का व्यवहार न केवल दुर्भाग्यपूर्ण है, बल्कि लोकतांत्रिक मर्यादाओं के भी खिलाफ है। घटना के बावजूद प्रदेश सरकार की ओर से आरोपित सीआईए इंचार्ज के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं की, जिससे सरकार की नीयत पर सवाल खड़े हो रहे हैं। यदि समय रहते निष्पक्ष जांच और सख्त कार्रवाई नहीं हुई, जजपा वर्कर सड़कों पर बड़ा आंदोलन करने का मजबूर हो जाएंगे। 27 अप्रैल को हिसार के क्रांति मैदान में आयोजित महापंचायत में नांगल चौधरी हलके से हजारों कार्यकर्ताओं ने शामिल होंगे। वर्करों की सुविधा के लिए वाहनों का प्रबंध किया गया है।

उदय नर्सिंग कॉलेज का भ्रमण दल रवाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

उदय नर्सिंग कॉलेज का शैक्षिक भ्रमण दल शनिवार को शिमला के लिए रवाना हुआ। इस दल की अगुवाई कॉलेज चेयरपर्सन डॉ. अर्चना ठाकुर ने की। रवाना होने से पूर्व कॉलेज परिसर में एक संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों को इस भ्रमण के उद्देश्य और महत्व के बारे में जानकारी दी गई। डॉ. अर्चना ठाकुर ने बताया कि इस शैक्षिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि शिमला में विद्यार्थियों को विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों, नर्सिंग प्रथाओं और आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का अवलोकन करने का अवसर मिलेगा, जिससे उनके ज्ञान और कौशल में वृद्धि होगी। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन बनाए रखने, समय का सदुपयोग करने और सीखने की भावना के साथ इस यात्रा में भाग लेने की सलाह दी। कॉलेज के शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों को सुरक्षित यात्रा और बेहतर अनुभव के लिए शुभकामनाएं दीं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डेंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

149 टीमों का गठन, 40 घरों में मिला लारवा, थमाया नोटिस

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने मनाया विश्व मलेरिया दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

स्वास्थ्य विभाग की ओर से जिले में विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया। सिविल सर्जन डॉ अशोक कुमार ने बताया कि हमारे जिले में इस वर्ष अभी तक कोई भी मलेरिया संक्रमित मरीज नहीं आया है, जबकि 2025 में 2, 2024 में 5, 2023 में 3 और 2022 में भी 3 मलेरिया संक्रमित केस मिले थे। उन्होंने बताया कि मलेरिया के उपचार और रोकथाम के लिए विभाग पूरी तरह सजग है। सभी सरकारी स्वास्थ संस्थाओं में मलेरिया की जांच और उपचार निःशुल्क उपलब्ध है। उन्होंने शहरी और ग्रामीण जनप्रतिनिधियों के साथ–साथ पंचायत और शहरी निकाय विभाग से अपील करते हुए कहा कि उपरोक्त सभी अपने–अपने एरिया में साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें और कहीं भी पानी खड़ा न होने दें। साथ ही जहां जरूरत हो वहां फॉगिंग भी करवाएं, क्योंकि ग्रामीण एरिया में फॉगिंग का जिम्मा पंचायत विभाग का और शहरी एरिया में शहरी निकाय विभाग का है। उन्होंने बताया कि इस बारे जिला पंचायत विकास अधिकारी और डीएमसी नारनौल को पत्र भी लिखा जा चुका है। इसी कड़ी में शहर के मौहल्ला फ्रांसखान स्थित रोजविला हाई स्कूल में स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बच्चो को पैंपलेट बांटकर, भाषण और पोस्टर मेकिंग द्वारा मलेरिया के प्रति जागरूक किया गया। उप सिविल सर्जन डॉ मनीष यादव ने बताया कि कोई भी बुखार मलेरिया हो सकता है। बुखार आने पर तुरंत रक्त की जांच करवाए और ईलाज लें। बार–बार बुखार आना, कंपन होना, सिर दर्द और उल्टी होना मलेरिया के लक्षण हो सकते हैं। डॉ यादव ने बताया कि अभी तक जिले में 149 टीम ने घर–घर जा कर 32,084 बुखार के मरीजों की जांच की है। 40 घरों में लारवा पाया गया है, जिनको नोटिस दिया गया है। साथ ही जिले के पानी के जोहड़ों, तालाबों आदि में गुंबुजिया मछली भी डलवाई जा रही हैं, ताकि मलेरिया के लारवा को रोका जा सके।

नारनौल। मलेरिया दिवस मनाती स्वास्थ्य विभाग की टीम। फोटो : हरिभूमि

आमजन से की अपील

मलेरिया से बचने के लिए उन्होंने अपील करते हुए कहा कि हमें अपने आसपास पानी इकट्ठा नहीं होने देना चाहिए। पूरी बाजू के कपड़े पहनने चाहिए। घर के दरवाजों और खिड़कियों पर जाली लगवानी चाहिए और मच्छरदानी और मच्छरनाशकों का प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ–साथ उन्होंने जनता से रविवार को ड्राई डे के रूप में मनाने की अपील करते हुए कहा कि सप्ताह के प्रत्येक रविवार को पानी के सभी बर्तनों जैसे कूलर, टंकी आदि को साफ करके सुखाकर दुबारा भरना चाहिए, ताकि मच्छर न पैदा हो सकें। इस अवसर पर स्कूल संचालिका अनीता मराठा, नरेश कुमार, सोनिया, ज्योति, मुकेश कुमार, सतीश कुमार, मनोज कुमार, अजय कुमार, महेश कुमार, संजय कुमार सहित स्वास्थ्य विभाग और स्कूल के कर्मचारी व बच्चे उपस्थित रहे।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

विशेषः अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस 29 अप्रैल

आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद में नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उनसे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यत्व का देवत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेंपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा
माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

न्यू ट्रेंड

गौरव द्विवेदी

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

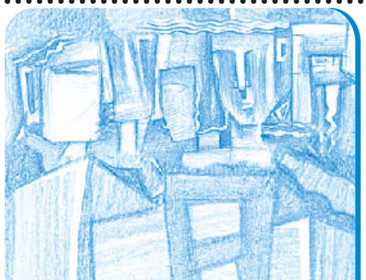

गीत / कृष्ण बिहारी

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

पुस्तक चर्चा / कुलदीप सिंह भाटी

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

लघुकथा / शीला श्रीवास्तव

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एडथुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एथडुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरूकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को भी अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अकसर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व
डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां मैं दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुतिः हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा
शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रृंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अकसर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रृंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं
बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

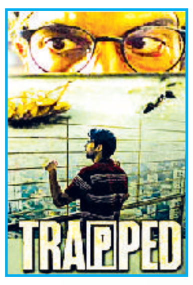

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *